04/10/19 06/15

नाम - रविप्रकाश
बी. ए. I

प्रश्न.01 प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों का वर्गीकरण कीजिए।
उत्तर - प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत -

इतिहास उन घटनाओं का वृत्तान्त है, जो भूतकाल में हुआ हो, अतः मूलतः महत्वपूर्ण तथ्यों को चुनकर अतीत में पुनर्निर्माण करने को ही इतिहास कहते हैं। ये महत्वपूर्ण तथ्य विभिन्न रूपों में होते हैं, जिन्हें इतिहास के स्रोत कहते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास भारत का गौरव का विषय है। प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाले स्रोतों को प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है -
① साहित्यिक स्रोत ② पुरातात्विक स्रोत

① साहित्यिक स्रोत - प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाले सामग्री प्रचुर मात्रा में है। अधिक विस्तार से जानने के लिए इसे दो भागों में बांटा जा सकता है - धार्मिक ग्रन्थ, लौकिक ग्रन्थ

① धार्मिक ग्रन्थ - धार्मिक ग्रन्थों में वे श्रेणी के ग्रंथ आते हैं, जो किसी धर्म से संबंधित प्रभावित होते हैं। धार्मिक ग्रन्थ से तत्कालिक सामाजिक, राजनीतिक, व धार्मिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। धर्म ग्रन्थ में ब्राह्मण, बौद्ध व जैन धर्म के अग्रलिखित ग्रंथ हैं -

ब्राह्मण ग्रंथ - प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाले ब्राह्मण ग्रंथ को प्रमुख ग्रंथ भी है -

i) वेद - आर्यों की प्राचीनतम ग्रंथ वेद है। वेद चार है, जिसमें से ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है। वेदों का भारतीय संस्कृति पर विशेष

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

महत्व है। यद्यपि वेद धार्मिक ग्रंथ है, जिनमें आर्यों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। ऋग्वेदों को श्रुति एवं संहिता भी कहते है। ऋग्वेद में 1028 सूक्ति, 10528 मंत्र तथा 10 मंडल है। जिसमें देवी, देवताओं की मंत्र भी शामिल है।

(ii) ब्राह्मण ग्रंथ — ब्रह्मा का अर्थ यज्ञ से है अतः यज्ञ का विधि प्रतिपादित करने वाले ग्रन्थों को ब्राह्मण ग्रंथ कहते है। ये यज्ञ और कर्मकाण्डो के विधान को समझने के लिए इस ग्रंथ की रचना की गई। प्रमुख ब्राह्मण ऐतरेय, पंचविंश, शतपथ व गोपथ है।

(iii) आरण्यक ग्रंथ - आरण्यक से तात्पर्य वन से है। अतः आरण्यक ग्रंथ उस ग्रंथ को कहा जाता है जिसका अध्ययन वनों में की जा सके।

(iv) उपनिषद — उप का अर्थ निकट व निषद का अर्थ बैठना होता है। अतः गुरु के समीप बैठकर किये गये अध्ययन से लिखी गई ग्रंथ को उपनिषद कहा जाता है। उपनिषदों की संख्या 108 है।

(v) महाकाव्य — वेदों के पश्चात् महाकाव्य का विशेष महत्व है। महाकाव्य दो है रामायण व महाभारत, रामायण की रचना महाकवि वाल्मिकी व महाभारत की रचना वेदव्यास ने की

(vi) वेदांग — वेदांग से तत्कालिक सामाजिक व धार्मिक पर प्रकाश पड़ता है। वेदांग, वैदिक अध्ययन की विशिष्ट विद्याओं की आधारें को वेदांग कहते है। वेदांग 6 है — छन्द, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त व ज्योतिष है।

लौकिक ग्रंथ या साहित्य – धार्मिक ग्रंथ के समान लौकिक ग्रंथ का प्राचीन भारतीय इतिहास पर विशेष महत्व रहा है। इसमें विद्वानों ने भारत के बारे में निम्न प्रकार की व्याख्या की जो इस प्रकार है –

अर्थशास्त्र – अर्थशास्त्र की रचना चाणक्य ने की

राजतरंगिनी – इसकी रचना कल्हण नामक विद्वान ने की

मेघदूत, रघुवंशम की रचना कालिदास ने की। इसके अतिरिक्त यूनानी वृत्तान्त, चीनी वृत्तान्त, तिब्बती वृत्तान्त ने भी भारत की व्याख्या की।

पुरातात्विक स्रोत – साहित्यिक स्रोत से अधिक पुरातात्विक स्रोत में प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रमाण मिलता है। पुरातात्विक स्रोत में उत्खनन के पश्चात विभिन्न प्रकार की अभिलेख, स्मारक, व मुद्राएं प्राप्त होती है। जिससे प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। यह प्रमुख है –

1. अभिलेख
2. स्मारक
3. मुद्राएँ

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

Name - Rupendra Kumar
Class - MA. I sem.

① प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थी ?
उत्तर - (अ) सिध

② उत्तर :- जार्ज चतुर्थ

③ उत्तर :- (ब) 1812 - 1822

④ उत्तर (अ) 1829

⑤ उत्तर :- ~~1832~~ 1815

उत्तर ③ ~~जार्ज~~ विलियम चतुर्थ को नाविक राजा कहा जाता था।

उत्तर ④ लार्ड ग्रे (1832 के अधिनियम)

उत्तर ⑥ ~~लार्ड~~ रार्बट पील को वित्त का जादुगर कहा जाता था।

उत्तर ⑦ लार्ड ग्रे, जान रसेल

(15)

उत्तर ① :- कैनिंग के विदेश निति निम्न है -

① इंग्लैण्ड में शान्ति बनाये रखना।
② शक्ति सन्तुलन स्थापीत करना।
③ युरोपीय देशो में शांति बनाये रखना।

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

(4) वियना कांग्रेस पर विश्वास न करना - यह वियना कांग्रेस को ~~में~~ में विश्वास नही करता था। यह कहता था, कि वियना कांग्रेस एक ढोंग है।

(5) किसी दुसरे देश मे होने वाले युद्ध में हस्तक्षेप नही करना।

Ans (5) चार्टिस्ट आन्दोलन के कारण -

(1) 1832 के अधिनियम की समस्या :- इस अधिनियम के तहत निम्न वर्ग में ध्यान नही देते थे।

(2) कार्न एक्ट (अनाज कानुन) :-
(3) बेकारी ~~करन~~ समस्या।
(4) शिक्षा का अभाव
(5) आर्थिक समस्या :- कारखानो के बन्द व अनाज कानुन के बन्द हो जाने के कारण इंग्लैण्ड में आर्थिक समस्या उत्पन्न हो गया।

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

① रार्बट पील के सुधारो का वर्णन कीजिए।

उत्तर :- रार्बट पील 1834 से इंग्लैंड के प्रधानमंत्री के पद पर थे रहे थे। उनके द्वारा इंग्लैण्ड में निम्न सुधार किये —

① न्याय संबंधि सम्बंधि सुधार :- इंग्लैण्ड में जो न्याय व्यवस्था थी, उसे रार्बट पील ने अच्छा बनाया।

② कारखाना अधिनियम :- 1834 में इंग्लैण्ड में कारखाना अधिनियम को पारित किया गया। इस अधिनियम के द्वारा कारखानो में काम करने के समय को बदला गया। कारखानो में 9-13 वर्ष के बच्चे व 13-16 वर्ष के बच्चों को दिन में सिर्फ 9 घंटे काम करने का आदेश दिया। और बच्चे प्रति-दिन 2 घंटे पढ़ाई करने के लिये जाना भी तय हुआ। उसके लिये इन्सपेक्टर की नियुक्ति किया जो इन सब को देख सके।

③ अनाज अनाज कानुन (कार्न एक्ट) :- यह नियम 1790 में लागु हुआ था। जिसको 1791 में पुनः बनाया गया। फिर 1815 में इसमे फिर कुछ सुधार किये गये।

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

जिससे इंग्लैण्ड में आयात - निर्यात पुरी तरह से बन्द कर दिया था। जिससे अनाजो के दामो में वृद्धि होने लगा। इस कारण से पूंजीपति लोग व जनसधारण को परेशानी हो रहा था। इस कारण विद्रोह भी उभा। इस तरह आयरलैण्ड में अकाल पड़ा। ~~जिस नसे~~ जिससे उनकी सारी आलु की फसल बर्बाद हो गया। और लोग भुखे मरने लगे। इस कारण से कई बहुत कोशिशो के बाद 1845 मे आन अनाज कानुन को पूरी तरह से बन्द कर दिया गया।

(4) दरिद्र कानून :- रार्बट पील ने सन् 1834 मे एक अधिनियम बनाया जिसे दरिद्र कानुन कहा गया है। इस कानुन के तहत बेरोजगार लोगो को कारखानो में रोजगार प्रदान करते थे। एक पुरषो और महिलाओ के लिये अलग - अलग काम करते थे। जिससे उनकी गरीबी दुर हो गई।

03/5

(5) पोनीपोल्टस एक्ट

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

② 1832 के सुधार अधिनियम की विशेषताएँ ?

उत्तर :- 1832 के सुधार अधिनियम के समय लार्ड ग्रे इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री था। इस समय जॉन रसेल के द्वारा तीन बार सुधार अधिनियम को इंग्लैण्ड की सभा में रखा गया। उसमें 1831, ~~25 मार्च~~ 25 जून 1831, अक्तुबर 1831 इसके बाद 1832 में सुधार अधिनियम पारित हुआ।

1832 के सुधार अधिनियम की विशेषता निम्न है -

(I) निर्वाचन सम्बन्धी सुधार :-

(II) मताधिकार सम्बन्धी सुधार

(I) निर्वाचन सम्बन्धी सुधार

(A) बरोह में जिसमें 2-2 प्रतिनिधि भेजे जाते हैं। उनको 1 प्रतिनिधी भेजने का अधिकार दिया गया।

(B) 2 हजार से 4000 जनसंख्या वाले बरोह को 1 प्रतिनिधी भेजने का अधिकार दिया गया।

(C) इस तरह बरोह में प्रतिनिधि

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

की जनसंख्या मे कमी आयी लगभग 267 पद रिक्त हो गये उसे काउन्टी, बड़े नगर व छोटे नगर मे बॉट दिया गया। अब वहाँ से भी प्रतिनिधि भेजे जा सकते है।

(II) मताधिकार सम्बंधी सुधार

(A) नगरो में जो 10 पौंड कर किराये के घर मे रहते है वे मताधिकार कर सकते हो

(B) जिसके पास भूमि है और वह और उस भूमि का पट्टा है वे मताधिकार कर सकते है।

(C) काउन्टी में 10 शिलिंग देने वाले मताधिकार दे सकते थे।

(III) अब गुप्त रूप से सीधे मतदान होने लगे

(IV) मतो को खरीदा व बेचा नही जा सकता था।

(V) निम्न वर्ग को भी प्रतिनिधी भेजने का अधिकार दिया गया।

PRINCIPAL
Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)